अंतर्राष्ट्रीय संबंधों का मंडल सिद्धांतः भारतीय राजनीतिक चिंतन का विश्लेषण

14

पायल
सक्षम कुमार

सारांश

यह अध्याय कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रतिपादित मंडल सिद्धांत का गहन एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है तथा उसे अंतरराष्ट्रीय संबंधों के भारतीय पारंपरिक सिद्धांत के रूप में व्याख्यायित करता है। प्राचीन भारतीय राजनीति चिंतन में मंडल सिद्धांत, जिसे भारतीय राजनीतिक चिंतन की एक प्रमुख आधारशिला माना जाता है, कूटनीति के विभिन्न जटिल आयामों की विवेचना करता है। प्राचीन भारतीय ग्रंथ जैसे मनुस्मृति, कामंदकीय नीतिसार, महाभारत एवं कौटिल्य के अर्थशास्त्र से हमें मंडल सिद्धांत का वर्णन प्राप्त होता है। परंतु कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र में मंडल सिद्धांत का अत्यधिक व्यावहारिक वर्णन किया गया है, जो अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में राज्य को अपने आसपास के मित्र एवं शत्रुओं की पहचान करके अपने संबंध स्थापित करने की सलाह देते हैं। मंडल सिद्धांत राज्य, सत्ता, शक्ति.संतुलन, कूटनीति और रणनीतिक व्यवहार की एक यथार्थवादी रूपरेखा प्रदान करता है, जिसमें विजिगीशु, अरि, मित्र, मध्यम एवं उदासीन राज्यों की अवधारणाएँ केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि मंडल सिद्धांत केवल प्राचीन राजनीतिक चिंतन तक सीमित नहीं है, बल्कि समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति की जटिलताओं जैसे पड़ोसी राज्यों के संबंध, गठबंधन निर्माण, शत्रु.मित्र की परिवर्तनशील प्रकृति तथा राष्ट्रीय हित को समझने में भी अत्यंत प्रासंगिक है। यह अध्याय यह भी दर्शाता है कि मंडल सिद्धांत पश्चिमी यथार्थवादी दृष्टिकोण से पूर्व शक्ति और व्यवहार आधारित राजनीति की व्याख्या प्रस्तुत करता है। इस प्रकार, मंडल सिद्धांत भारतीय ज्ञान परंपरा का एक महत्वपूर्ण और सशक्त योगदान है, जो आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन को वैचारिक गहराई तथा वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करता है।

पायल
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ।
ईमेलः payalccsual@gmail.com
सक्षम कुमार
शोधार्थी, राजनीति विज्ञान विभाग, बरेली कॉलेज, बरेली। *ईमेलः kumarsaksham723@gmail.com*
Publisher: Anu Books, DOI: https://doi.org/10.31995/Book.AB356-A26. Ch.14
Book Name : भारतीय ज्ञान परम्परा और सामाजिक विज्ञान
Plagiarism Report: 06%

मुख्य शब्दः *मंडल सिद्धांत, कौटिल्य, अर्थशास्त्र, अंतरराष्ट्रीय संबंध, भारतीय राजनीतिक चिंतन, भारतीय ज्ञान परंपराए शक्ति संतुलन, कूटनीति*

भूमिका

भारतीय राजनीतिक चिंतन की परंपरा केवल नैतिक उपदेशों तक सीमित नहीं रही है, बल्कि उसने राज्य, सत्ता और कूटनीतिक व्यवहार को यथार्थपरक दृष्टि से समझने का प्रयास किया है। प्राचीन भारत में राजनीतिक व्यवस्था और अंतरराज्यीय संबंधों का अध्ययन शासन के व्यावहारिक अनुभवों पर आधारित था। इसी परंपरा में कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र एक ऐसा ग्रंथ है, जो राजनीति को आदर्शवाद से अलग करते हुए व्यवहारिक और रणनीतिक संदर्भों में परिभाषित करता है। मंडल सिद्धांत अर्थशास्त्र का एक केंद्रीय सिद्धांत है, जिसके माध्यम से कौटिल्य ने राज्यों के बीच संबंधों की संरचनाए शक्ति.संतुलन और कूटनीति की भूमिका को स्पष्ट किया है।[1] कौटिल्य का मंडल सिद्धांत, जिसे कई विद्वानों ने शक्ति संतुलन का एक प्राचीन सिद्धांत माना है, राज्य के परस्पर संबंधों को समझने के लिए एक व्यवस्थित और व्यावहारिक ढांचा प्रदान करता है। इस सिद्धांत के अनुसार, किसी भी केंद्रीय राज्य के चारों ओर अन्य राज्यों के संकेंद्रित वृत्त होते हैं, जिनमें से प्रत्येक का अलग–अलग राजनीतिक महत्व एवं भूमिका है।[2] कौटिल्य एक यथार्थवादी राजनीति विचारक थे जिन्होंने राज्य की वास्तविक शक्ति, सुरक्षा चिंताओं, और भू–राजनीतिक हितों को प्राथमिकता दी। अर्थशास्त्र में उन्होंने यह स्पष्ट किया कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति में नैतिकता और धर्म का कोई स्थान नहीं है, बल्कि केवल राष्ट्रीय हित ही सर्वोपरि है। इस कारण से आधुनिक पाश्चात्य राजनीति विज्ञान में कौटिल्य को थूसाईंडाईड्स, मैकियावेली, और हॉब्स के समान एक महान यथार्थवादी विचारक माना जाता है।[3] कौटिल्य की ''साध्य को साधन से युक्त करो''की नीति राज्य की सुरक्षा और विस्तार के लिए कठोर उपायों के उपयोग को न्यायसंगत ठहराती है। मंडल सिद्धांत की मूल संकल्पना यह है कि पड़ोसी राज्य स्वाभाविक रूप से शत्रु होता है, क्योंकि भूमि और संसाधनों के लिए उनके हित परस्पर विरोधी होते हैं।[4] हालांकि, इसी सिद्धांत में कौटिल्य ने एक महत्वपूर्ण नीति भी प्रतिपादित की ''शत्रु का शत्रु मित्र है''। इस सिद्धांत के अनुसार राज्य अपने भौगोलिक, राजनीतिक और सामरिक परिवेश के आधार पर मित्र, शत्रु अथवा तटस्थ संबंध विकसित करते हैं। मंडल सिद्धांत यह मानता है कि अंतरराष्ट्रीय संबंध स्थिर नहीं होते, बल्कि समय, परिस्थिति और हितों के अनुसार निरंतर परिवर्तित होते रहते हैं।

यह अध्याय मंडल सिद्धांत को भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में समझने का प्रयास करता है तथा यह विश्लेषण प्रस्तुत करता है कि किस प्रकार यह सिद्धांत आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों की जटिलताओं जैसे शक्ति प्रतिस्पर्धा, रणनीतिक गठबंधन और राष्ट्रीय हित को समझने में सहायक हो सकता है। इस प्रकार, मंडल सिद्धांत न केवल प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन की बौद्धिक विरासत को दर्शाता है, बल्कि समकालीन अंतरराष्ट्रीय राजनीति के अध्ययन के लिए भी एक उपयोगी वैचारिक ढाँचा प्रदान करता है।

कौटिल्य और अर्थशास्त्र का परिचय

भारतीय राजनीतिक चिंतन के इतिहास में कौटिल्य को एक ऐसे विचारक के रूप में स्वीकार किया जाता है, जिन्होंने राज्य और सत्ता को नैतिक आदर्शों के साथ-साथ व्यावहारिक यथार्थ के संदर्भ में समझने का प्रयास किया। कौटिल्य, जिन्हें चाणक्य या विष्णुगुप्त के नाम से भी जाना जाता है, मौर्य साम्राज्य के निर्माण और प्रशासनिक संरचना में एक प्रमुख भूमिका निभाने वाले राजनैतिक रणनीतिकार थे। उनका चिंतन शास्त्रीय दर्शन तक सीमित न होकर प्रत्यक्ष शासन अनुभव, राजनीतिक व्यवहार और सामरिक आवश्यकताओं से गहराई से जुड़ा हुआ था। अर्थशास्त्र कौटिल्य का सबसे महत्वपूर्ण ग्रंथ माना जाता है, जिसमें राज्यकला, प्रशासन, अर्थव्यवस्था, न्याय, दंड व्यवस्था, कूटनीति और युद्धनीति का विस्तृत विवेचन किया गया है। यह ग्रंथ राजनीति को केवल नैतिकता या आदर्शवाद के आधार पर नहीं देखताए बल्कि सत्ता के संरक्षण और विस्तार के लिए आवश्यक व्यवहारिक उपायों पर बल देता है। इसी कारण अर्थशास्त्र को भारतीय राजनीतिक यथार्थवाद का आधारग्रंथ भी माना जाता है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र केवल एक ऐतिहासिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि शासन, कूटनीति, प्रशासन और आंतरिक स्थायित्व की एक समयातीत पाठशाला है। समकालीन भारत की शासन प्रणाली में, जहाँ लोकतंत्र, संघीय ढाँचा, और आर्थिक उदारीकरण जैसे तत्व प्रमुख हैं, वहाँ भी कौटिल्य की नीतियाँ प्रशासनिक नैतिकता, नीतिशास्त्र और रणनीतिक दृष्टिकोण में प्रासंगिक बनी हुई हैं। उदाहरणतः, आज के भ्रष्टाचार, कर चोरी, काले धन, और शक्ति–संवेदनशीलता जैसे मुद्दों को यदि कौटिल्यीय दण्डनीति के आलोक में देखा जाए, तो प्रशासनिक पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को मजबूती मिल सकती है। कौटिल्य के अनुसार, राज्य का उद्देश्य केवल शासन करना नहीं, बल्कि 'प्रजा सुखाय' होना चाहिए।[5] आज जब सरकारें 'सबका साथ, सबका विकास' की बात करती हैं, यह लक्ष्य उसी आदर्श का समकालीन प्रतिरूप है।

कौटिल्य के चिंतन की विशेषता यह है कि उन्होंने राज्य को एक जीवंत संस्था के रूप में देखाए जिसकी स्थिरता शासक की दूरदर्शिता, प्रशासनिक दक्षता और रणनीतिक निर्णयों पर निर्भर करती है। उनके अनुसार राज्य की शक्ति केवल सैन्य क्षमता तक सीमित नहीं होती, बल्कि आर्थिक संसाधन, सामाजिक व्यवस्थाए प्रशासनिक नियंत्रण और कूटनीतिक कौशल भी उसकी मजबूती के निर्णायक तत्व होते हैं। अर्थशास्त्र में इन सभी आयामों को परस्पर संबद्ध करते हुए प्रस्तुत किया गया है। अंतरराज्यीय संबंधों के संदर्भ में कौटिल्य का दृष्टिकोण विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि राज्यों के बीच संबंध स्थायी मित्रता या शत्रुता पर आधारित नहीं होते, बल्कि वे समय, परिस्थितियों और हितों के अनुसार परिवर्तित होते रहते हैं। इसी व्यवहारिक समझ के आधार पर मंडल सिद्धांत का विकास हुआ, जो अर्थशास्त्र में अंतरराष्ट्रीय संबंधों की एक संगठित और तर्कसंगत रूपरेखा प्रस्तुत करता है। इस प्रकार, कौटिल्य और अर्थशास्त्र का महत्व केवल प्राचीन भारतीय इतिहास तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समकालीन राजनीति और

अंतरराष्ट्रीय संबंधों को समझने के लिए भी एक प्रासंगिक वैचारिक आधार प्रदान करता है। कौटिल्य का चिंतन यह दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में राज्य और राजनीति का अध्ययन गहन विश्लेषणए व्यवहारिक अनुभव और रणनीतिक दृष्टि पर आधारित रहा है, जो आज भी सामाजिक विज्ञानों के लिए विचारोत्तेजक है।

मंडल सिद्धांत की अवधारणा

मंडल सिद्धांत कौटिल्य के अर्थशास्त्र में प्रतिपादित अंतरराज्यीय संबंधों का एक केंद्रीय और सुव्यवस्थित सिद्धांत है। जो राज्य के राजनीतिक व्यवहार को यथार्थवादी दृष्टि से समझने का प्रयास करता है। यह सिद्धांत इस धारणा पर आधारित है कि राज्य अपनी भौगोलिक स्थितिए सामरिक आवश्यकताओं और राजनीतिक हितों के आधार पर एक.दूसरे के साथ संबंध स्थापित करते हैं। कौटिल्य का यह दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि अंतरराष्ट्रीय संबंध नैतिक आदर्शों से अधिक व्यावहारिक हितों द्वारा संचालित होते हैं। मंडल सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक राज्य अपने चारों ओर अन्य राज्यों के एक मंडल यवृत्तद्ध से घिरा होता है। इस मंडल में पड़ोसी राज्य सामान्यतः संभावित शत्रु माने जाते हैं, जबकि उन शत्रु राज्यों के पड़ोसी मित्र की भूमिका में होते हैं। इस प्रकार, राज्य संबंधों की पहचान स्थायी नहीं होती, बल्कि वह परिस्थितियों और हितों के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। कौटिल्य ने इस परिवर्तनशीलता को राजनीति की स्वाभाविक प्रकृति के रूप में स्वीकार किया है। कौटिल्य के मंडल सिद्धांत को समझने के लिए इसकी मूल संरचना को जानना अत्यंत आवश्यक है। मंडल सिद्धांत एक भौगोलिक–राजनीतिक ढांचा है जिसमें एक केंद्रीय राज्य के चारों ओर विभिन्न मंडल (वृत्त) होते हैं। प्रत्येक मंडल में अलग–अलग राज्य होते हैं, और प्रत्येक राज्य की स्थिति केंद्रीय राज्य से उसकी दूरी पर निर्भर करती है। कौटिल्य के अनुसार, मंडल संरचना निम्नलिखित प्रकार से व्यवस्थित होती है।

1. प्रथम मंडलः केंद्रीय राज्य के तत्काल पड़ोसी राज्य। कौटिल्य के अनुसार ये स्वाभाविक शत्रु (अरि) होते हैं, क्योंकि भूमि और संसाधनों के लिए उनके हित परस्पर विरोधी होते हैं। इस मंडल में आक्रामकता और संघर्ष की संभावना सर्वाधिक होती है।

2. द्वितीय मंडलः तत्काल पड़ोसियों के पड़ोसी, जो संभावित मित्र होते हैं। कौटिल्य की प्रसिद्ध नीति ''अरेः अरिमित्रः'' (शत्रु का शत्रु मित्र है) इसी मंडल पर आधारित है। ये राज्य केंद्रीय राज्य के साथ गठबंधन कर सकते हैं क्योंकि उनके सामान्य शत्रु हो सकते हैं।

3. तृतीय और चतुर्थ मंडलः अधिक दूर के राज्य जो विशेष सुरक्षा चिंता का कारण नहीं बनते, परंतु व्यापार और सांस्कृतिक आदान–प्रदान के माध्यम से महत्वपूर्ण हो सकते हैं।

मंडल सिद्धांत अनिवार्य रूप से एक शक्ति–राजनीति का सिद्धांत है, जहां भू राजनीति और शक्ति–संतुलन ही निर्णायक भूमिका निभाते हैं। कौटिल्य ने यह स्पष्ट किया कि किसी भी राज्य की सुरक्षा और विस्तार के लिए कूटनीति, सैन्य

शक्ति, और रणनीतिक गठबंधन आवश्यक हैं।[5] इस सिद्धांत में विजिगीशु राज्य को केंद्र में रखा गया है, जो विस्तार और सुरक्षा की आकांक्षा रखने वाला राज्य होता है। उसके संबंध अरि यशत्रुद्ध मित्र, मध्यम और उदासीन राज्यों से निर्धारित होते हैं। इन श्रेणियों के माध्यम से कौटिल्य यह स्पष्ट करते हैं कि अंतरराज्यीय राजनीति केवल द्विपक्षीय नहीं होती, बल्कि बहुपक्षीय और जटिल होती है, जिसमें प्रत्येक राज्य की भूमिका और स्थिति अलग.अलग हो सकती है। मंडल सिद्धांत शक्ति.संतुलन की अवधारणा को भी रेखांकित करता है। कौटिल्य के अनुसार कोई भी राज्य पूर्णतः स्वतंत्र या आत्मनिर्भर नहीं होता उसकी शक्ति और सुरक्षा अन्य राज्यों की स्थिति और व्यवहार से प्रभावित होती है। इसलिएए कूटनीति, गठबंधन, संधि और विरोध सभी राजनीतिक रणनीति के आवश्यक उपकरण बन जाते हैं। यह दृष्टिकोण आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में प्रचलित शक्ति राजनीति की अवधारणा से भी साम्य रखता है।

इस प्रकार, मंडल सिद्धांत केवल प्राचीन भारतीय राजनीतिक चिंतन का हिस्सा नहीं है, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय संबंधों की व्यवहारिक व्याख्या प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांत यह दर्शाता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में राज्य और राजनीति का अध्ययन तर्क, अनुभव और रणनीतिक विवेक पर आधारित रहा है। समकालीन संदर्भ में भी मंडल सिद्धांत अंतरराष्ट्रीय राजनीति की जटिल संरचनाओं को समझने के लिए एक सशक्त वैचारिक आधार प्रदान करता है।

मंडल सिद्धांत के प्रमुख तत्व

मंडल सिद्धांत की संरचना कुछ ऐसे मूल तत्वों पर आधारित है, जिनके माध्यम से कौटिल्य अंतरराज्यीय राजनीति की जटिलता और परिवर्तनशीलता को स्पष्ट करते हैं। ये तत्व राज्य के व्यवहार, उसकी रणनीति तथा अन्य राज्यों के साथ उसके संबंधों को समझने का एक व्यवस्थित ढाँचा प्रदान करते हैं।

सबसे पहला और केंद्रीय तत्व विजिगीशु राज्य है। विजिगीशु वह राज्य होता है जो अपनी सुरक्षा, स्थिरता और विस्तार की आकांक्षा रखता है। कौटिल्य के अनुसार प्रत्येक राज्य स्वभावतः अपने हितों की पूर्ति की ओर उन्मुख होता है, इसलिए विजिगीशु की भूमिका मंडल सिद्धांत में निर्णायक मानी जाती है। उसकी नीतियाँ और निर्णय ही मंडल की संपूर्ण संरचना को दिशा प्रदान करते हैं।

दूसरा महत्वपूर्ण तत्व अरि यशत्रुद्ध राज्य है। कौटिल्य पड़ोसी राज्य को सामान्यतः शत्रु के रूप में देखते हैं, क्योंकि भौगोलिक निकटता संसाधनोंए सीमाओं और प्रभाव क्षेत्र को लेकर प्रतिस्पर्धा उत्पन्न करती है। यह धारणा यह दर्शाती है कि अंतरराष्ट्रीय संबंधों में संघर्ष की संभावना संरचनात्मक होती है, न कि केवल वैयक्तिक शत्रुता पर आधारित।

तीसरा तत्व मित्र राज्य है, जो अरि राज्य का पड़ोसी होता है और विजिगीशु के हितों के अनुकूल कार्य कर सकता है। कौटिल्य के अनुसार मित्रता नैतिक भावनाओं पर नहीं, बल्कि साझा हितों और सामरिक लाभ पर आधारित होती है। इसलिए मित्र और शत्रु की पहचान स्थायी नहीं होती, बल्कि परिस्थितियों के अनुसार बदल सकती है।

मंडल सिद्धांत में मध्यम और उदासीन राज्यों की अवधारणा भी महत्वपूर्ण है। मध्यम राज्य वह होता है, जो दो प्रतिद्वंद्वी शक्तियों के बीच स्थित होकर संतुलन बनाए रखने की क्षमता रखता हैए जबकि उदासीन राज्य अपेक्षाकृत दूर स्थित होता है और प्रत्यक्ष संघर्ष में शामिल नहीं होता। ये दोनों श्रेणियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि अंतरराज्यीय राजनीति केवल प्रत्यक्ष विरोध तक सीमित नहीं रहती, बल्कि उसमें तटस्थता और मध्यस्थता की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इसके अतिरिक्त, मंडल सिद्धांत में शक्ति. संतुलनए कूटनीति, संधि, दंड और साम जैसे तत्वों को रणनीतिक उपकरण के रूप में स्वीकार किया गया है। कौटिल्य के अनुसार राज्य को परिस्थितियों के अनुरूप इन उपायों का चयन करना चाहिए। यह दृष्टिकोण यह दर्शाता है कि राजनीतिक व्यवहार स्थिर सिद्धांतों से नहीं, बल्कि विवेकपूर्ण निर्णय और व्यावहारिक समझ से संचालित होता है।

शड्गुण नीति

कौटिल्य का शड्गुण सिद्धांत राज्य को छह प्रमुख विदेश नीति विकल्पों का वर्णन प्रदान करता है।

1. **संधिः** दो या अधिक राज्यों के बीच एक पारस्परिक समझौता जहां वे सामान्य हितों या खतरों के विरुद्ध गठबंधन करते हैं। यह नीति तब अपनाई जाती है जब राज्य को किसी शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी का सामना करना हो।
2. **विग्रहः** यह सैन्य संघर्ष का विकल्प है। कौटिल्य ने सुझाया कि विग्रह तभी अपनाया जाए जब राज्य की सैन्य शक्ति पर्याप्त हो और जीत की संभावना अधिक हो।
3. **आसनः** तटस्थता की नीति, जहां राज्य किसी के साथ न तो जुड़ता है और न ही संघर्ष में लगता है। यह तब अपनाई जाती है जब राज्य की शक्ति न तो संधि करने के लिए काफी हो और न ही विग्रह के लिए।
4. **यानः** सैन्य तैयारी और सीमावर्ती क्षेत्र में सैन्य उपस्थिति बढ़ाने की नीति। यह मार्च के माध्यम से दुश्मन पर दबाव डालने का एक तरीका है।
5. **संश्रयः** एक शक्तिशाली राज्य की सुरक्षा में आश्रय लेना। यह तब अपनाई जाती है जब राज्य कमजोर हो और किसी बहुत शक्तिशाली प्रतिद्वंद्वी का सामना कर रहा हो।
6. **द्वैधीभावः** एक ही समय में दो विरोधी नीतियों को अपनाना। उदाहरण के लिए, एक राज्य के साथ तो शांति की बातचीत करना, जबकि दूसरे को धमकी देना। यह नीति अधिक परिपक्व और जटिल है।

ये छह नीतियां विभिन्न राजनीतिक परिस्थितियों में राज्य के विभिन्न विकल्पों का प्रतिनिधित्व करती हैं और राज्य को अपनी परिस्थितियों के अनुसार सर्वोत्तम नीति चुननी चाहिए। ये नीतियां न तो नैतिकता पर आधारित हैं और न ही भावनाओं पर – ये विशुद्ध राष्ट्रीय हितों पर आधारित हैं।[6]

सप्तांग सिद्धांत

कौटिल्य ने राज्य की शक्ति को मापने के लिए सप्तांग सिद्धांत का प्रस्ताव दिया था। राज्य की शक्ति सात मुख्य तत्वों पर निर्भर करती है।

1. स्वामीः राज्य का नेता या शासक। एक सक्षम और दूरदर्शी नेता राज्य की शक्ति को कई गुना बढ़ा सकता है।
2. अमात्यः राज्य के मंत्री और अधिकारी जो प्रशासन को संचालित करते हैं।
3. जनपदः राज्य की जनसंख्या और उसका भू–क्षेत्र।
4. दुर्गः किले, दुर्ग, और बुनियादी ढांचा जो राज्य की सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।
5. कोशः राज्य का आर्थिक संसाधन और राजस्व।
6. दंडः सेना और सैन्य शक्ति।
7. मित्रः राज्य के सहयोगी और मित्र देश।

कौटिल्य ने बताया कि एक मजबूत राज्य वह है जिसमें ये सभी सात तत्व संतुलित और विकसित हों। इन सात तत्वों का एक समग्र विकास ही राज्य की वास्तविक शक्ति का संकेत है।[7]

इस प्रकार, मंडल सिद्धांत के ये प्रमुख तत्व मिलकर अंतरराष्ट्रीय संबंधों की एक यथार्थवादी और गतिशील व्याख्या प्रस्तुत करते हैं। ये तत्व यह सिद्ध करते हैं कि भारतीय राजनीतिक चिंतन में राज्य, शक्ति और संबंधों का विश्लेषण गहन तर्क और व्यावहारिक अनुभव पर आधारित रहा है, जिसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है।

अंतरराष्ट्रीय संबंधों में मंडल सिद्धांत की प्रासंगिकता

अंतरराष्ट्रीय संबंधों का अध्ययन लंबे समय तक पश्चिमी राजनीतिक चिंतन और सिद्धांतों जैसे यथार्थवाद, उदारवाद और संरचनात्मक यथार्थवाद के प्रभुत्व में रहा है। इन सिद्धांतों में राज्य को शक्ति, सुरक्षा और राष्ट्रीय हित से प्रेरित एक इकाई के रूप में देखा गया है। किंतु भारतीय राजनीतिक चिंतन में इन विषयों पर बहुत पहले ही गहन विचार किया जा चुका था। कौटिल्य का मंडल सिद्धांत इसी परंपरा का एक सशक्त उदाहरण हैए जो अंतरराष्ट्रीय संबंधों को व्यवहारिकए रणनीतिक और यथार्थवादी दृष्टि से समझने का प्रयास करता है। समकालीन वैश्विक राजनीति के संदर्भ में यह सिद्धांत आज भी अपनी वैचारिक उपयोगिता बनाए हुए है।

1. पड़ोसी–प्रथम नीतिः मंडल सिद्धांत का व्यावहारिक अनुप्रयोग

2014 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार आने के बाद, भारत की विदेश नीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया। पड़ोसी–प्रथम नीति, जिसे मोदी सरकार ने अपनाया, सीधे तौर पर कौटिल्य के मंडल सिद्धांत पर आधारित है। इस नीति का उद्देश्य दक्षिण एशिया में भारत की राजनीतिक और आर्थिक प्रभुता को मजबूत करना है। पड़ोसी–प्रथम नीति के चार मुख्य स्तंभ हैं।[8]

भारत ने अपने पड़ोसी देशों (बांग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, भूटान, मालदीव, पाकिस्तान, और अफगानिस्तान) के साथ उच्च–स्तरीय राजनीतिक संबंध स्थापित किए हैं। मोदी की पहली यात्रा भूटान को थी, जो भारत के संबंधों की प्राथमिकता को दर्शाती है। भारत ने अपने पड़ोसी देशों को विकास में सहायता प्रदान की है।

संचार, परिवहन, बिजली, और स्वास्थ्य सेवाओं में भारत ने काफी निवेश किया है। यह नीति मंडल सिद्धांत के ''योगक्षेम'' सिद्धांत को प्रतिबिंबित करती है। भारत ने क्षेत्रीय संपर्क को बढ़ाने के लिए सड़क, रेलवे, और सीमा पार परिवहन समझौतों में निवेश किया है। उदाहरण के लिए, भारत–बांग्लादेश मैत्री सीमा सड़क परियोजना इसका एक प्रमुख उदाहरण है। भारत ने SAARC की विफलता के बाद, BIMSTEC को अपनी क्षेत्रीय राजनीति का केंद्र बिंदु बनाया है। भारत की पड़ोसी–प्रथम नीति को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है, विशेषकर चीन के ''बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव'' के कारण। चीन ने पड़ोसी देशों में अपनी आर्थिक उपस्थिति को काफी बढ़ा दिया है, जिससे भारत की नीति को चुनौती मिल रही है।

2. QUAD: शत्रु का शत्रु = मित्र

चतुर्भुज सुरक्षा संवाद की संकल्पना मंडल सिद्धांत का सबसे स्पष्ट और समकालीन अनुप्रयोग है। QUAD को एक ''जीवंत भू–राजनीतिक गठबंधन'' के रूप में वर्णित किया गया है जो भारत, अमेरिका, जापान, और ऑस्ट्रेलिया को एक साथ लाता है। QUAD की स्थापना का मूल कारण चीन की बढ़ती शक्ति को संतुलित करना है। जब से 2017 में QUAD को पुनः सक्रिय किया गया है, तब से इसकी महत्ता में लगातार वृद्धि हुई है। यह न केवल सुरक्षा–केंद्रित है, बल्कि आर्थिक सहयोग, जलवायु परिवर्तन, और महामारी नियंत्रण जैसे विभिन्न क्षेत्रों में भी काम कर रहा है।[9] QUAD में भारत की महत्वपूर्ण भूमिका है। एक प्रमुख अध्ययन में यह स्पष्ट किया गया है कि "भारत के बिना, QUAD को कोई विशेष महत्व नहीं है" क्योंकि अमेरिका के पास पहले से ही जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ द्विपक्षीय सुरक्षा व्यवस्था है। भारत को शामिल करने से ही QUAD को एक सच्चा बहुपक्षीय सुरक्षा मंच मिलता है। हालांकि, भारत ने QUAD में अपनी भागीदारी को सावधानी से संचालित किया है। भारत ने यह स्पष्ट किया है कि वह क्षेत्रीय स्थिरता और समृद्धि के लिए QUAD में है। यह दृष्टिकोण कौटिल्य की ''द्वैधीभाव'' नीति को प्रतिबिंबित करता है, जहां भारत एक ही समय में कई राष्ट्रों के साथ संबंध बनाए रखता है।

3. BIMSTEC: क्षेत्रीय सहयोग का मंच

बे ऑफ बंगाल इनिशिएटिव फॉर मल्टी–सेक्टोरल टेक्निकल एंड इकोनॉमिक कोऑपरेशन भारत के पड़ोसी–प्रथम नीति का एक अन्य महत्वपूर्ण अनुप्रयोग है। BIMSTEC में सदस्य हैं: बांग्लादेश, भूटान, भारत, म्यांमार, नेपाल, श्रीलंका, और थाईलैंड। BIMSTEC भारत के लिए एक रणनीतिक महत्व रखता है, विशेषकर SAARC के विफल होने के बाद। SAARC की विफलता का मुख्य कारण था भारत–पाकिस्तान संबंधों में तनाव, जिसके कारण इस संगठन को कोई भी निर्णय लेने में सफलता नहीं मिली। BIMSTEC का विस्तार दक्षिण एशिया से आगे थाईलैंड तक है, जो इसे एक अधिक प्रभावी मंच बनाता है।''बे ऑफ बंगाल विश्व के सबसे कम एकीकृत क्षेत्रों में से एक है, जहां व्यापार, संपर्क, और सहयोग की मात्रा न्यून है''। परंतु BIMSTEC के माध्यम से, भारत और अन्य देश इस एकीकरण को

बढ़ाने का प्रयास कर रहे हैं।[10] BIMSTEC में भारत का नेतृत्व महत्वपूर्ण है। भारत के बिना, BIMSTEC एक कमजोर संगठन बन जाता है। भारत का आर्थिक आकार, सैन्य शक्ति, और क्षेत्रीय प्रभाव ही BIMSTEC को सशक्त बनाता है।

यह नीति कौटिल्य के मंडल सिद्धांत के एक परिशोधित संस्करण को प्रतिबिंबित करती है, जहां भारत एक केंद्रीय शक्ति के रूप में कार्य कर रहा है, और विभिन्न मंडलों के राज्यों के साथ रणनीतिक संबंध बना रहा है। मंडल सिद्धांत का मूल आधार यह मान्यता है कि कोई भी राज्य अकेले अस्तित्व में नहीं रहता, बल्कि वह अन्य राज्यों के एक संरचनात्मक परिवेश में कार्य करता है। कौटिल्य के अनुसार प्रत्येक राज्य अपने चारों ओर मित्र, शत्रु, मध्यम और उदासीन राज्यों के एक मंडल से घिरा होता है। यह अवधारणा आधुनिक अंतरराष्ट्रीय प्रणाली में राज्यों के बीच अंतर्संबंधों और परस्पर निर्भरता को समझने में सहायक सिद्ध होती है। आज की वैश्विक राजनीति में भी यह देखा जा सकता है कि राज्य अपने भौगोलिक पड़ोस, सामरिक स्थिति और आर्थिक हितों के आधार पर मित्रता और शत्रुता का निर्धारण करते हैं। समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंधों में शक्ति.संतुलन की अवधारणा एक केंद्रीय तत्व मानी जाती है। पश्चिमी यथार्थवादी विचारक हंस मॉर्गेंथाउ और केनेथ वाल्ट्ज ने शक्ति और सुरक्षा को राज्य व्यवहार की मूल प्रेरणा बताया है। किंतु कौटिल्य ने बहुत पहले ही यह स्पष्ट कर दिया था कि राज्य की शक्ति केवल सैन्य बल तक सीमित नहीं होती, बल्कि आर्थिक संसाधनए प्रशासनिक क्षमताए सामाजिक स्थिरता और कूटनीतिक कौशल भी उसकी शक्ति का निर्धारण करते हैं।[11] मंडल सिद्धांत में शक्ति.संतुलन का यह व्यापक दृष्टिकोण आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति की जटिलताओं को अधिक समग्र रूप में समझने में सहायता प्रदान करता है।

मंडल सिद्धांत की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि वह अंतरराष्ट्रीय संबंधों को स्थिर नहीं मानता। कौटिल्य के अनुसार मित्र और शत्रु की पहचान स्थायी नहीं होती, परिस्थितियाँ बदलने पर संबंधों की प्रकृति भी बदल जाती है। यह दृष्टिकोण आज की अंतरराष्ट्रीय राजनीति में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है, जहाँ राज्यों के बीच गठबंधन अवसरवादी होते हैं और राष्ट्रीय हितों के अनुसार पुनः परिभाषित किए जाते हैं। शीत युद्ध के दौरान बने अनेक गठबंधन शीत युद्ध की समाप्ति के बाद अप्रासंगिक हो गए, जो मंडल सिद्धांत की इस मूल मान्यता की पुष्टि करते हैं। आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में क्षेत्रीय राजनीति का महत्व लगातार बढ़ रहा है। क्षेत्रीय संगठन, सामरिक साझेदारियाँ और पड़ोसी राज्यों के बीच संबंध वैश्विक राजनीति की दिशा को प्रभावित करते हैं। मंडल सिद्धांत में पड़ोसी राज्यों को संभावित शत्रु मानने की अवधारणा को पूर्ण शत्रुता के रूप में नहीं, बल्कि संभावित प्रतिस्पर्धा के रूप में समझा जाना चाहिए। यह अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि भौगोलिक निकटता अपने साथ सहयोग और संघर्ष दोनों की संभावनाएँ लेकर आती है। दक्षिण एशिया, मध्य पूर्व और यूरोप जैसे क्षेत्रों में पड़ोसी राज्यों के बीच संबंध इसी प्रकार की जटिलताओं को दर्शाते हैं।

कौटिल्य ने मंडल सिद्धांत के अंतर्गत कूटनीति को अत्यधिक महत्व दिया है। उन्होंने साम, दाम, दंड और भेद जैसे उपायों को राज्य की रणनीतिक नीति का अनिवार्य अंग माना। आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भी सैन्य संघर्ष की तुलना में कूटनीतिक संवाद, आर्थिक प्रतिबंध, रणनीतिक सहयोग और सूचना युद्ध अधिक प्रभावी साधन बनते जा रहे हैं। इस दृष्टि से मंडल सिद्धांत आधुनिक कूटनीतिक व्यवहार के साथ गहरा साम्य रखता है। मंडल सिद्धांत की प्रासंगिकता केवल शक्ति राजनीति तक सीमित नहीं है, बल्कि यह नैतिकता और व्यवहार के बीच संतुलन की भी बात करता है। कौटिल्य ने यह स्वीकार किया कि राजनीति में नैतिकता का महत्व है, किंतु राज्य की सुरक्षा और अस्तित्व सर्वोपरि है। यह दृष्टिकोण आधुनिक अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भी दिखाई देता है, जहाँ मानवाधिकार, लोकतंत्र और अंतरराष्ट्रीय कानून के साथ.साथ राष्ट्रीय हितों को भी प्राथमिकता दी जाती है। मंडल सिद्धांत इस द्वंद्व को समझने का एक यथार्थवादी ढाँचा प्रदान करता है।

भारतीय विदेश नीति के संदर्भ में भी मंडल सिद्धांत की वैचारिक छाया देखी जा सकती है। स्वतंत्र भारत की विदेश नीति में पड़ोसी देशों के साथ संबंध, रणनीतिक स्वायत्तता और बहुध्रुवीय विष्व व्यवस्था की कल्पना मंडल सिद्धांत की मूल अवधारणाओं से अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ी प्रतीत होती है। यद्यपि आधुनिक भारतीय विदेष नीति सीधे कौटिल्य के सिद्धांतों का अनुसरण नहीं करती, फिर भी व्यवहारिक दृश्टि से उसमें मंडल सिद्धांत की यथार्थवादी सोच का प्रभाव देखा जा सकता है। समालोचनात्मक दृश्टि से यह स्वीकार करना आवष्यक है कि मंडल सिद्धांत की कुछ सीमाएँ भी हैं। यह सिद्धांत मुख्यतः राज्य.केंद्रित है और गैर-राज्य अभिनेताओं, अंतरराश्ट्रीय संगठनों और वैष्विक संस्थाओं की भूमिका पर सीमित प्रकाष डालता है। आधुनिक अंतरराश्ट्रीय संबंधों में बहुराश्ट्रीय कंपनियाँ, अंतरराश्ट्रीय संगठन और वैष्विक नागरिक समाज भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिन्हें मंडल सिद्धांत की पारंपरिक संरचना में समाहित करना कठिन हो सकता है। फिर भी इसकी मूल यथार्थवादी अंतर्दृश्टि आज भी प्रासंगिक बनी हुई है। इस प्रकार मंडल सिद्धांत अंतरराश्ट्रीय संबंधों को समझने के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा द्वारा प्रस्तुत एक सषक्त और व्यवहारिक ढाँचा है। यह सिद्धांत यह दर्षाता है कि भारतीय राजनीतिक चिंतन में राज्य, षक्ति और कूटनीति का विष्लेशण गहन अनुभव, रणनीतिक विवेक और व्यावहारिक समझ पर आधारित रहा है। समकालीन वैष्विक राजनीति की जटिलताओं को समझने के लिए मंडल सिद्धांत न केवल एक ऐतिहासिक अवधारणा है, बल्कि एक जीवंत और उपयोगी वैचारिक उपकरण भी है।

मूल्यांकन

मंडल सिद्धांत को भारतीय राजनीतिक चिंतन में अंतरराश्ट्रीय संबंधों का एक महत्वपूर्ण और यथार्थवादी सिद्धांत माना जाता है। कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित यह सिद्धांत राज्य के व्यवहार को नैतिक आदर्षों के बजाय व्यावहारिक हितों, षक्ति और रणनीति के आधार पर समझने का प्रयास करता है। इस दृश्टि से मंडल सिद्धांत की

सबसे बड़ी विषेशता यह है कि यह अंतरराज्यीय संबंधों को स्थिर या आदर्षवादी न मानकर उन्हें गतिषील, परिस्थिति–निर्भर और हित–आधारित प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करता है।यह स्पश्ट हो गया है कि कौटिल्य का मंडल सिद्धांत न केवल ऐतिहासिक महत्व रखता है, बल्कि आज के समय में भी अत्यंत प्रासंगिक है। भारत की विदेष नीति के विभिन्न आयामों में मंडल सिद्धांत के सिद्धांत स्पश्ट रूप से दिखाई देते हैं। भारत की पड़ोसी–प्रथम नीति सीधे तौर पर कौटिल्य के इस विचार पर आधारित है कि राज्य को अपने तत्काल पड़ोसियों के साथ अच्छे संबंध स्थापित करने चाहिए। भारत की इस नीति के परिणामस्वरूप दक्षिण एषिया में भारत का प्रभाव बढ़ा है। बांग्लादेष, नेपाल, और श्रीलंका जैसे देषों के साथ भारत के संबंधों में सुधार हुआ है, जिससे भारत की क्षेत्रीय नेतृत्व को मजबूती मिली है।[12] भारत की बहु–संरेखण नीति कौटिल्य की शड्गुण नीति का एक आधुनिक अनुप्रयोग है। कौटिल्य के अनुसार, राज्य को विभिन्न परिस्थितियों में विभिन्न नीतियां अपनानी चाहिए। भारत आज भी यही करता है – कभी संधि करता है, कभी तटस्थता बनाए रखता है, और कभी आर्थिक सहयोग (सम्मश्रय) के माध्यम से अपने हित साधता है। मंडल सिद्धांत की एक प्रमुख षक्ति उसकी यथार्थवादी प्रकृति है।

कौटिल्य यह स्पश्ट करते हैं कि राजनीति में मित्रता और षत्रुता स्थायी नहीं होती, बल्कि समय, परिस्थिति और लाभ-हानि के आकलन के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। यह दृश्टिकोण आधुनिक अंतरराश्ट्रीय संबंधों के यथार्थवादी सिद्धांतों से गहरा साम्य रखता है। षक्ति–संतुलन, रणनीतिक गठबंधन और अवसरवादी सहयोग जैसी अवधारणाएँ मंडल सिद्धांत में पहले से ही विद्यमान हैं, जो इसकी वैचारिक परिपक्वता को दर्षाती हैं। दूसरा मंडल सिद्धांत राज्य की षक्ति को बहुआयामी रूप में देखता है। कौटिल्य के अनुसार राज्य की षक्ति केवल सैन्य क्षमता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि आर्थिक संसाधन, प्रषासनिक दक्षता, सामाजिक स्थिरता और कूटनीतिक कौषल भी उतने ही महत्वपूर्ण होते हैं। यह दृश्टिकोण आधुनिक अंतरराश्ट्रीय संबंधों में प्रचलित समग्र षक्ति की अवधारणा के निकट हैए जिससे मंडल सिद्धांत की समकालीन प्रासंगिकता और अधिक स्पश्ट हो जाती है।[13]

हालाँकि, मंडल सिद्धांत की कुछ सीमाएँ भी हैं, जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह सिद्धांत मुख्यतः राज्य–केंद्रित है और राजनीति को सत्ता और हितों की प्रतिस्पर्धा के रूप में देखता है। आधुनिक अंतरराश्ट्रीय संबंधों में गैर.राज्य अभिनेताओं जैसे अंतरराश्ट्रीय संगठन, बहुराश्ट्रीय कंपनियाँ, वैष्विक नागरिक समाज और आतंकवादी समूहों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो गई है, जिनका स्पश्ट विष्लेशण मंडल सिद्धांत में नहीं मिलता। इस कारण आधुनिक वैष्विक राजनीति की पूर्ण व्याख्या के लिए मंडल सिद्धांत अकेला पर्याप्त नहीं प्रतीत होता।

इसके अतिरिक्त, मंडल सिद्धांत में नैतिकता की भूमिका सीमित दिखाई देती है। कौटिल्य ने यद्यपि धर्म और न्याय की बात की है, किंतु व्यवहार में उन्होंने राज्यहित को सर्वोच्च प्राथमिकता दी है। आधुनिक अंतरराश्ट्रीय राजनीति में मानवाधिकार, अंतरराश्ट्रीय कानून और वैष्विक नैतिक मानदंडों को भी महत्व दिया जाता है। इस संदर्भ में मंडल

सिद्धांत को पूर्णतः नैतिक आधार पर खरा उतरता हुआ नहीं कहा जा सकता, बल्कि इसे एक व्यवहारिक और यथार्थवादी ढाँचे के रूप में समझना अधिक उपयुक्त होगा।

एक अन्य समालोचनात्मक बिंदु यह है कि मंडल सिद्धांत प्राचीन राजनीतिक संरचना पर आधारित है, जहाँ संप्रभु राज्य अपेक्षाकृत सीमित संख्या में थे और वैष्वीकरण जैसी जटिल प्रक्रियाएँ विद्यमान नहीं थीं। आज की अंतरराश्ट्रीय व्यवस्था बहुध्रुवीय, अत्यधिक अंतर्संबद्ध और तकनीकी रूप से उन्नत है। ऐसे में मंडल सिद्धांत के कुछ तत्वों को यथावत लागू करना कठिन हो सकता है, हालाँकि उसकी मूल अंतर्दृश्टि आज भी उपयोगी बनी हुई है।[14]

समग्र रूप से देखा जाए तो मंडल सिद्धांत को न तो केवल ऐतिहासिक विचार मानकर खारिज किया जा सकता है और न ही उसे आधुनिक अंतरराश्ट्रीय संबंधों का पूर्ण विकल्प माना जा सकता है। इसकी वास्तविक उपयोगिता इसके वैचारिक ढाँचे और यथार्थवादी अंतर्दृश्टि में निहित है। यह सिद्धांत भारतीय ज्ञान परंपरा की उस क्षमता को उजागर करता है, जिसमें राजनीति और अंतरराश्ट्रीय संबंधों को गहन अनुभवए तर्क और व्यवहारिक विवेक के आधार पर समझा गया है। इसलिए मंडल सिद्धांत आधुनिक अंतरराश्ट्रीय संबंधों के अध्ययन में एक पूरक और वैकल्पिक दृश्टिकोण के रूप में अत्यंत महत्वपूर्ण बना रहता है।

निश्कर्श

इस अध्ययन का उद्देष्य कौटिल्य के अर्थषास्त्र में प्रतिपादित मंडल सिद्धांत को केवल एक प्राचीन राजनीतिक अवधारणा के रूप में नहीं, बल्कि अंतरराश्ट्रीय संबंधों की समकालीन समझ के लिए एक वैचारिक उपकरण के रूप में प्रस्तुत करना रहा है। अध्याय के विभिन्न भागों में यह स्पश्ट करने का प्रयास किया गया है कि मंडल सिद्धांत भारतीय राजनीतिक चिंतन की उस समष्द्ध परंपरा का प्रतिनिधित्व करता हैए जिसमें राजनीति को नैतिक आदर्षवाद के साथ.साथ व्यवहारिक यथार्थ के संदर्भ में समझा गया है। कौटिल्य का मंडल सिद्धांत, जो 2300 साल पहले प्रतिपादित किया गया था, आज के समकालीन अंतर्राश्ट्रीय संबंधों में अत्यंत प्रासंगिक है। भारत की विदेष नीति, विषेशकर 2014 के बाद की अवधि में, मंडल सिद्धांत के विभिन्न सिद्धांतों को लागू कर रही है। पहला मुख्य निश्कर्श यह है कि भारत की पड़ोसी–प्रथम नीति सीधे तौर पर मंडल सिद्धांत पर आधारित है। भारत अपने तत्काल पड़ोसियों के साथ राजनीतिक, आर्थिक, और सुरक्षा संबंधों को मजबूत करके क्षेत्रीय नेतष्त्व स्थापित करने का प्रयास कर रहा है।

मंडल सिद्धांत का सबसे महत्वपूर्ण निश्कर्श यह है कि अंतरराश्ट्रीय संबंधा स्वभावतः गतिषील और हित-आधारित होते हैं। कौटिल्य ने यह स्पश्ट किया कि मित्रता और षत्रुता स्थायी नहीं होती, बल्कि परिस्थितियोंए षक्ति-संतुलन और राज्यहित के अनुसार परिवर्तित होती रहती है। यह दृश्टिकोण आधुनिक अंतरराश्ट्रीय राजनीति में स्पश्ट रूप से देखा जा सकता है, जहाँ गठबंधन, साझेदारियाँ और रणनीतिक संबंध अवसरों और आवष्यकताओं के अनुसार निरंतर पुनर्परिभाशित होते

रहते हैं। इस प्रकार मंडल सिद्धांत आधुनिक यथार्थवादी दृश्टिकोण से पहले ही अंतरराज्यीय राजनीति की मूल प्रवृत्तियों को पहचान लेता है। इस अध्ययन से यह भी स्पश्ट होता है कि कौटिल्य ने राज्य की षक्ति को बहुआयामी रूप में परिभाशित किया। उनके अनुसार सैन्य क्षमता के साथ.साथ आर्थिक संसाधनए प्रषासनिक दक्षता, सामाजिक स्थिरता और कूटनीतिक कौषल राज्य की वास्तविक षक्ति के निध ार्ारक तत्व हैं। यह व्यापक दृश्टिकोण आधुनिक अंतरराश्ट्रीय संबंधों में प्रचलित ''समग्र षक्ति'' की अवधारणा से मेल खाता है। इससे यह निश्कर्श निकलता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में षक्ति और राजनीति की समझ न केवल गहन थी, बल्कि व्यावहारिक रूप से भी विकसित थी।

मंडल सिद्धांत का एक अन्य महत्वपूर्ण योगदान कूटनीति और रणनीतिक विवेक पर उसका बल है। कौटिल्य ने सामए दामए दंड और भेद जैसे उपायों को परिस्थितिजन्य रणनीतियों के रूप में प्रस्तुत किया न कि स्थायी नीति के रूप में। यह दृश्टिकोण यह दर्षाता है कि राजनीति में लचीलापन और विवेकपूर्ण निर्णय अत्यंत आवष्यक होते हैं। आधुनिक अंतरराश्ट्रीय संबंधों में संवादए आर्थिक सहयोगए दबाव की राजनीति और रणनीतिक समझौते इसी व्यवहारिक सोच की पुश्टि करते हैं। अध्ययन से यह भी स्पश्ट हुआ है कि मंडल सिद्धांत की सीमाएँ होते हुए भी उसकी वैचारिक उपयोगिता को नकारा नहीं जा सकता। यह सिद्धांत मुख्यतः राज्य.केंद्रित है और आध ुनिक वैष्विक राजनीति में सक्रिय गैर.राज्य अभिनेताओं की भूमिका पर सीमित प्रकाष डालता है। इसके बावजूदए इसकी मूल यथार्थवादी अंतर्दृश्टि आज भी प्रासंगिक बनी हुई है। आधुनिक अंतरराश्ट्रीय व्यवस्था की जटिलताओं को समझने के लिए मंडल सिद्धांत को अन्य समकालीन सिद्धांतों के साथ जोड़कर देखा जा सकता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में यह अध्ययन इस निश्कर्श पर पहुँचता है कि मंडल सिद्धांत केवल अतीत की बौद्धिक विरासत नहीं हैए बल्कि वह समकालीन सामाजिक विज्ञानों के लिए भी एक सषक्त वैचारिक संसाधन है। यह सिद्धांत यह दर्षाता है कि भारतीय राजनीतिक चिंतन में अंतरराश्ट्रीय संबंधों की समझ पष्चिमी सिद्धांतों से कहीं पहले विकसित हो चुकी थी। इससे न केवल भारतीय राजनीतिक विचार की वैष्विक प्रासंगिकता सिद्ध होती हैए बल्कि सामाजिक विज्ञानों में भारतीय दृश्टिकोण को पुनः स्थापित करने की आवष्यकता भी रेखांकित होती है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि मंडल सिद्धांत अंतरराश्ट्रीय संबंधों के अध ययन में एक वैकल्पिक, यथार्थवादी और बहुआयामी दृश्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांत आधुनिक वैष्विक राजनीति की जटिलताओं को समझने में सहायक होने के साथ.साथ भारतीय ज्ञान परंपरा की वैचारिक गहराई और समकालीन उपयोगिता को भी उजागर करता है। इस प्रकारए मंडल सिद्धांत न केवल इतिहास का विशय हैए बल्कि वर्तमान और भविश्य की अंतरराश्ट्रीय राजनीति को समझने का एक महत्वपूर्ण आधार भी है।

संदर्भ

1. मिश्रा, एस., कौटिल्य का मंडल सिद्धांत, रिसर्च जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोषल साइंसेज, खंड 3(1), 2012, पृ0सं0– 145–148।
2. वही, पृ0सं0– 145–148।
3. बोएषे, आर., द फस्ट ग्रेट पॉलिटिकल रियलिस्टः कौटिल्य एंड हिज अर्थषास्त्र, लेक्सिंगटन बुक्स, 2003।
4. सेठी, एस. सी., एवं रंजन, सी. पी., फॉरेन पॉलिसी इन कौटिल्य'स अर्थषास्त्राः अ क्रिटिकल एनालिसिस ऑफ द इंपॉर्टेंस ऑफ राजमंडल थ्योरी इन इंडिया'स फॉरेन पॉलिसी इन द 21st सेंचुरी, इंटरनेषनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (IJCRT)।
5. बोएषे, आर., द फर्स्ट ग्रेट पॉलिटिकल रियलिस्टः कौटिल्य एंड हिज अर्थषास्त्र, पूर्वोक्त।
6. सेठी, एस. सी., एवं रंजन, सी. पी., फॉरेन पॉलिसी इन कौटिल्य'स अर्थषास्त्राः अ क्रिटिकल एनालिसिस ऑफ द इंपॉर्टेंस ऑफ राजमंडल थ्योरी इन इंडियाज फॉरेन पॉलिसी इन द 21st सेंचुरी, पूर्वोक्त।
7. षर्मा, आर. एस., एस्पेक्ट्स ऑफ पॉलिटिकल आइडियाज एंड इंस्टिट्यूषन्स इन एंषिएंट इंडिया, मोतीलाल बनारसीदास पब्लिषर्स, 2014।
8. गायत्री, एवं मीणा, एस., इंडिया'स नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी अंडर नरेंद्र मोदी एरा 2014–2024, इंटरनेषनल जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस एंड गवर्नेंस, 7(1), 2024, पृ0सं0– 97–103।
9. सिंह, एस., रीडिंग 'इंडिया वे' इन द नेबरहुड फर्स्ट पॉलिसी, इकोनॉमिक एंड पॉलिटिकल वीकली 58(40), 2023, पृ0सं0– 1–5।
10. PMC, द इवोल्यूषन ऑफ द क्वाडः ड्राइविंग फोर्सेज, इम्पैक्ट्स, एंड स्ट्रैटेजिक इम्प्लिकेषन्स, PubMed सेंट्रल, 9(12), 2022, पृ0सं0– 1–15।
11. महिदा, आर., BIMSTEC: बे ऑफ बंगाल इनिषिएटिव फॉर मल्टी–सेक्टरल टेक्निकल ऐंड इकोनॉमिक कोऑपरेषन – SWOT एनालिसिस फ्रॉम इंडियन पर्सपेक्टिव्स, इंटरनेषनल जर्नल ऑफ मैनेजमेंट एंड प्रोडक्षन रिसर्च, 3(4), 2024, पृ0सं0– 1–18।
12. RSIS, मल्टीपोलैरिटी एंड मल्टी–अलाइन्मेंटः इंडिया'स क्वेस्ट फॉर ऑटोनॉमी इन अ चेंजिंग वर्ल्ड, राजारत्नम स्कूल ऑफ इंटरनेषनल स्टडीज पॉलिसी पेपर, IP25042, 2025, पृ0सं0– 1–28।
13. SWP बर्लिन, द क्वाड्रिलैटरल सिक्योरिटी डायलॉग बिटवीन ऑस्ट्रेलिया, इंडिया, जापान, एंड द यूनाइटेड स्टेट्स, स्टिफ्टुंग विसेन्षाफ्ट एंड पोलिटिक 2022, पृ0सं0– 1–28।